Chap-4

चतुर्थ अध्याय

*

:
:
:
:
:
:
:
:
:
:

सम्बन्धित क्षेत्र का पूर्वकृत कार्य

संबंधित क्षेत्र का पूर्वकृत शोध कार्य

द्वितीय भाषा के रूप में आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी शिक्षण पर विवेचना करने के बाद शोधकर्ता ने इस पर प्रकाश डाला है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अबतक किसने कितना शोध काम किया है ।

शोध कार्य की दृष्टि से इस विषय का पर्याप्त महत्व है । क्योंकि शोधकार्य में शोधकर्ता को नवीन तथ्यों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करना होता है ।

शोधकर्ता ने सम्बन्धित क्षेत्र के पूर्वकृत शोधकार्य को जानने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्राप्त लघु शोध प्रबन्धों के रिपोर्ट आदि प्राप्त करने प्रत्यक्ष रूप से उन विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया है ।

शोधकर्ता ने हिन्दी विषय पर इस क्षेत्र के पूर्वकृत कार्य पर ही प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है ।

***

उस्मानियाँ विश्वविद्यालय तथा महाराजा सायाजी राव विश्वविद्यालय; बरौदा के एम्0 एड्0 के छात्रों ने अबतक इस विषय से संबंधित जो शोधकार्य उपस्थित किया है, नीचे उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है । शोधकर्ता ने यह विवरण विषय की मौलिकता एवं नवीनता को सिद्ध करने के उद्देश्य से दिया है । पूर्वकृत शोध कार्य निम्न प्रकार हैं ।

1. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने 1957 में "मराठी भाषियों की हिन्दी में त्रुटियाँ" नामक लघु शोध प्रबंध एम्0 एड्0 की परीक्षा के लिए प्रस्तुत किया है । यह शोध प्रबंध 138 पृष्ठों का है ।

शोधकर्ता को हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद से संचालित विभिन्न हिन्दी परीक्षाओं की उत्तर पुस्तकों को जाँचने का सौभाग्य कई बार प्राप्त हुआ था । शोधकर्ता ने मराठी, छात्रों के हिन्दी लेखन सम्बन्धी गलतियों पर अपने लघु शोध प्रबंध में प्रकाश डाला है ।

शोधकर्ता ने अपने शोध विषय को 11 अध्यायों में विभाजित किया है । प्रथम अध्याय में उन्होंने हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला है । उसमें दक्खिनी हिन्दी का विवरण भी दिया है । द्वितीय अध्याय में शोधकर्ता ने उर्दू और हिन्दी की सैद्धान्तिक आलोचना को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि हिन्दी एवं उर्दू के बीच झगड़े का कारण अंग्रेजी ही है । कुछ स्वच्छंद हिन्दी संस्थाओं की हिन्दी सेवा की प्रशंसा भी की गई है । तृतीय अध्याय में भाषा के विकास संबंधी सिद्धान्तों का विवरण दिया है । चतुर्थ अध्याय में दक्खिनी हिन्दी का स्वरूप का परिचय दिया है । पंचम अध्याय में लेखक ने मराठी भाषा का स्वरूप एवं उसपर संस्कृत भाषा के प्रभाव पर ज़ोर दिया है । षष्ठ अध्याय में मराठी छात्रों को हिन्दी लिखते समय होनेवाली सामान्य गलतियों पर

प्रकाश डाला है । अष्टम् अध्याय में मराठी भाषा भाषी छात्रों के उच्चारण संबंधी गलतियों का विश्लेषण किया है । नवम् अध्याय में लेखक ने छात्रों से प्रत्यय, उच्चारण तथा लोकोक्ति आदि पर होनेवाली गलतियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया है । दशम् अध्याय में हिन्दी पाठ्य पुस्तकों के गुण दोषों पर आलोचना की गई है । उपवाचनों की भी आलोचना लेखक ने की है । एकादश अध्याय में शोधकर्ता ने मराठी भाषियों से होनेवाली हिन्दी त्रुटियों के निवारण के उपाय प्रस्तुत किये हैं । लेखक का कहना है कि हिन्दी पाठ्य पुस्तकें दोषपूर्ण है । मातृभाषा का प्रभाव अन्य भाषा शिक्षण पर स्पष्ट रूपसे पड़ता है । ~~निरन्तर~~ निरन्तर अध्यापक इन त्रुटियों को दूर करने में प्रयत्नशील होना चाहिए । हिन्दी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करने के लिए महिला हिन्दी अध्यापकों की आवश्यकता है ।

2 श्री वी० पी० लुंल्ला : 1957 : शोधकर्ता ने "आठवीं कक्षा के छात्रों के के लिए हिन्दी उपलब्धि परीक्षा" का निर्माण एम्० एड्० उपाधि के लिए किया है । आपने इस लघु शोध प्रबंध को महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा को प्रस्तुत किया है ।

शोधकर्ता ने अपने लघु शोध प्रबंध को एक बृहद्रूप दिया है । अनुभवी शोधकर्ता ने राष्ट्रभाषा की समस्या, संविधान में हिन्दी का स्थान, राष्ट्रीय जीवन में हिन्दी का स्थान आदि की चर्चा शोध कार्य के प्रथम अध्याय में की ।

शोधकर्ता ने उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण विभिन्न अंशों को दृष्टि में रखकर किया । परीक्षा के निर्माण में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को ध्यान में रखा गया । इसके बाद शोधकर्ता ने उपलब्धि-परीक्षण का आयोजन किया है ।

शोधकर्ता ने विभिन्न वैज्ञानिक विधियों द्वारा आठवीं कक्षा के छात्रों के लिए हिन्दी उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण किया । इस परीक्षण के निर्माण में निम्न बातों पर ध्यान दिया गया है ।

1) छात्रों की वर्तनी संबंधी परीक्षण ।
2) छात्रों के शब्द भण्डार सम्बन्धी परीक्षण ।
3) छात्रों के भाव अभिव्यक्ति का परीक्षण ।
4) छात्रों के मुहावरें एवं कहावतों के ज्ञान का परीक्षण ।
5) हिन्दी का शुद्ध प्रयोग का परीक्षण ।
6) व्याकरण सम्बन्धी परीक्षण ।

उपर्युक्त भाषा तत्वों एवं भाषा परीक्षण के आवश्यक अंशों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने गुजरात में पढ़नेवाले आठवीं कक्षा के छात्रों का भाषा उपलब्धि-परीक्षण का निर्माण किया है ।

3 श्री दादे प्रसाद : शोधकर्ता ने 1959 में उस्मानियाँ विश्वविद्यालय के एम्० एड्० की उपाधि के आंशिक पूर्ती के लिए "अहिन्दी भाषा भाषियों के लिए हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें" नामक शीर्षक पर अपना लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है । इस शोध प्रबंध के मार्गदर्शक, उस विश्वविद्यालय के रीडर श्री रायबलवीर प्रसाद जी हैं ।

शोधकर्ता ने अपने लघु प्रबंध में निम्न बातों पर अधिक ध्यान दिया है ।

उनका विचार है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है । इस दृष्टि से हिन्दी को भारत के शिक्षा विधान में सही स्थान प्राप्त होना चाहिए । हिन्दी अध्यापन में पाठ्यपुस्तकें विशेष प्रकार का स्थान रखतीं हैं, इसलिए हिन्दी पाठ्यपुस्तकों

के निर्माण में पर्याप्त ध्यान देना चाहिए । इस विषय को मूलाधार मानकर शोधकर्ता ने हैदराबाद में द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जानेवाली हिन्दी पाठ्यपुस्तकों की सैद्धान्तिक आलोचना करके निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

शोधकर्ता का कहना है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार ने 10 वीं कक्षा की द्वितीय भाषा हिन्दी के पाठ्यपुस्तक के लिए ~~8वीं~~ 7वीं कक्षा प्रथम भाषा की हिन्दी पुस्तक, 6वीं कक्षा की प्रथम भाषा हिन्दी पुस्तक 8वीं कक्षा के द्वितीय भाषा पाठ्यपुस्तक को पढ़ना पड़ता है । यह निर्णय पूर्णतः दोषपूर्ण है । शोधकर्ता ने हिन्दी पुस्तकों में बाह्य एवं अंतर रूपों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है ।

शोधकर्ता ने इस विषय पर निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) पाठ्यपुस्तकों का बाह्य एवं आंतरिक रूप सुन्दर होना चाहिए ।
2) पाठ्यपुस्तकें सामाजिक, आवश्यकताओं की पूर्ति करें ।
3) पाठ्यपुस्तकों के लेखकों को छात्रों की मातृभाषा जानना आवश्यक है ।
4) अनुभवी अध्यापकों के पाठों को पुस्तक में स्थान देना चाहिए ।
5) पाठ्यपुस्तकों के विषय में विविधता होनी चाहिए ।
6) पाठ्यपुस्तकों का कविता भाग छात्रों में सौंदर्योपासना की भावना भर सके ।
7) पाठ्यपुस्तकों की छपाई सरकार स्वयं अपने हाथ में लें ।
8) पाठ्यपुस्तकों का मूल्य इतना कम हो कि सभी छात्र उसे आसानी से खरीद सके ।

आदि सुझावों को शोधकर्ता ने इस लघु शोध प्रबंध में दिया है ।

15

4 श्रीमती सरताज किशोरी : श्रीमती सरताज किशोरी ने 1960 में अपना लघु शोध प्रबंध "तेलंगाना क्षेत्र में हिन्दी का विकास" (1949 के बाद) को एम्0 एड्0 उपाधि के लिए प्रस्तुत किया । यह लघु शोध प्रबंध 104 पृष्ठों का है । लेखिका ने तेलंगाना में पुलिस एक्शन के बाद हिन्दी की स्थिति को दर्शाने का अथक प्रयत्न किया । उस समय की पाठशालाओं में हिन्दी शिक्षण की स्थिति का परिचय दिया है ।

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य के आधार पर निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) दक्षिण में हिन्दी का प्रचार 1000 ई0 पू0 से रहा है । परन्तु यहाँ के लोग यह नहीं जानते थे कि यह भाषा कौनसी है ।

2) सरकार ने हिन्दी भाषा को पाठ्यक्रम में उचित स्थान नहीं दिया है । हिन्दी प्रचारकों ने इसका प्रचार धूमधाम से किया और इसको गाँधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमों में एक भाग समझा था ।

3) 1949 के बाद सरकार ने शिक्षा विधान में कुछ परिवर्तन लाये । तेलंगाना के पाठशालाओं में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाने की अनुमति दी गई । हिन्दी माध्यम के हाईस्कूल खोले गये और हिन्दी माध्यम से शिक्षा दी जाने लगी ।

4) लेखिका ने इस बात की पुष्टि की हैं कि हिन्दी के विकास में यहाँ के शिक्षा शास्त्री एवं अधिकारी सुमुख नहीं है और इसके साथ ही साथ अच्छे हिन्दी अध्यापक और हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का प्राप्त न होना भी एक कारण है ।

5 चन्द्रदेव शर्मा जी : सन् 1961 में "उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के तेलुगु भाषा-भाषी विद्यार्थियों पर हिन्दी व्याकरण का प्रभाव" नामक लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता ने विषय की गंभीरता पर विद्वतापूर्ण आलोचना की है । उनका कहना है कि हिन्दी किसी क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है । इसलिए सरकार तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी पढ़ाने के लिए कितना व्याकरण किस रूप में सीखना चाहिए इसका निर्धारण विशेषज्ञों की सहायता से करें।

शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) अध्यापक छात्रों को हिन्दी व्याकरण के सिद्धान्तों का ज्ञान किसी न किसी स्तर पर देना आवश्यक है ।

2) तेलुगु छात्रों को हिन्दी व्याकरण के सिद्धान्तों को तेलुगु तथा हिन्दी की तुलनात्मक प्रणाली के द्वारा देना उचित होगा । दो भाषाओं की समानता एवं असमानताओं का ज्ञान देना आवश्यक है । इससे छात्रों की शंकाएँ दूर हो जाती हैं और हिन्दी पर छात्रों की मातृभाषा का प्रभाव भी कम हो जाता है । शोधकर्ता ने हिन्दी व्याकरण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है और उनका कहना है कि भाषा सिखाते समय व्याकरण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है ।

हिन्दी भाषा-भाषी होते हुए भी लेखक ने अपने अनुभव के आधार पर यह कहा कि अहिन्दी प्रदेशों में पढ़ानेवाले हिन्दी अध्यापक छात्रों की मातृभाषा से परिचय प्राप्त करने पर ज़ोर दिया है ।

6 श्रीमती सरस्वती देवी : ने 1962 में एम0 एड0 के लिए "द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण की विषयवस्तु एवं शिक्षण पद्धतियाँ (नगरद्वय) के परिप्रेक्ष में" नामक लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है । यह लघु शोध प्रबन्ध 161 पृष्ठों का है । इसमें छः अध्याय हैं । शोधकर्ता ने इसमें भाषा का विकास, उच्चारण का

महत्व और हिन्दी भाषा का विकास और भारतीय भाषाओं पर इसका प्रभाव आदि विषयों पर प्रकाश डाला है ।

शोधकर्ता ने अपने लघु शोध प्रबंध में द्वितीय द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला है ।

1) लेखिका का कहना है कि भाषा शिक्षण में छात्रों के सामाजिक परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान होता है । इसका प्रभाव छात्रों की भाषा में व्यक्त होता है ।

2) शोधकर्ता का कहना है कि आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी शिक्षा का केवल धुंधला चित्र ही हमारे सामने आता है ।

3) हिन्दी पाठ्यक्रम में पर्याप्त त्रूटियाँ हैं । पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकता है । पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक आयु के अनुकूल होना चाहिए । पाठ्यक्रम में नये शब्दों का विशेष रूप से उल्लेख हो ।

4) पाठ्यक्रम में व्याकरण आदि अभ्यासों पर विशेष बल दिया जाये ।

5) हिन्दी उपवाचकों को पाठ्यक्रम में स्थान दियाँ जाये ।

6) हिन्दी पाठ्यपुस्तक चयन की पद्धति में परिवर्तन आवश्यक है । हिन्दी अध्यापकों को अध्यापन का काम रुचि के साथ करना चाहिए, इससे छात्रों में हिन्दी सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है । हिन्दी अध्यापक छात्रों की मातृभाषा एवं हिन्दी का अच्छा ज्ञान रखें । ऐसे अध्यापकों को ही हिन्दी अध्यापकों के नाते नियुक्त किया जाये ।

हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में छात्रों से बहुपरिचित तेलुगु विषय सामग्री को स्थान दिया जाये ।

7 श्री वुर्रा वेंकटप्पय्या जी ने 1962 में "आन्ध्र प्रदेश के उच्च प्राथमिक कक्षाओं में तेलुगु भाषाभाषियों के हिन्दी शिक्षण की कठिनाइयों" नामक लघु शोध प्रबन्ध एम्0 एड्0 के लिए प्रस्तुत किया है । यह 91 पृष्ठों का शोध प्रबंध है ।

लेखक ने इस लघु शोध प्रबंध में विभिन्न अंशों पर अनुभवपूर्ण प्रकाश डाला है । इसमें लेखक ने सँविधान में हिन्दी का स्थान पर विद्वतापूर्ण चर्चा की है । शोधकर्ता का कहना है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हिन्दी को सही स्थान नहीं दिया है । पाठ्यक्रम में हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में रखना चाहिए । हिन्दी अध्यापक छात्रों की गलतियों के प्रति ठीक ध्यान नहीं देने के कारण तेलुगु भाषाभाषी छात्र हिन्दी में कई गलतियाँ करते हैं । लेखक ने इन गलतियों को अपने शोधकार्य की सहायता से पहचानकर अपना महत्वपूर्ण सुझाव दिया है ।

शोधकर्ता का कहना है कि आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित हिन्दी पाठ्यक्रम दोषपूर्ण है । हिन्दी अध्यापन में जिन सहायक सामग्री की आवश्यकता है उनका अभाव है । उच्च माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने के लिए कोई निर्दिष्ट पद्धति नहीं है । तेलुगु भाषाभाषियों को पढ़ाने के लिए हिन्दी शिक्षण में नवीन पद्धतियों का खोज करना आवश्यक है । हिन्दी पाठ्यक्रम की विषय सामग्री के चयन पर शोध करना आवश्यक है । हिन्दी व्याकरण एवं लिपि में सुधार लाना आवश्यक है ।

8 जयंत सी0 शाह ने 1969 में 'डभोई' के उच्च माध्यमिक पाठशालाओं के छात्रों के हिन्दी में पिछडे होने के कारणों पर एक अध्ययन" नामक लघु शोध प्रबंध एम्0 एड्0 उपाधि के लिए बड़ौदा विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया ।

सँविधान में हिन्दी की स्थिति आदि को बताते हुए शोधकर्ता ने एक

प्रश्नावली (अध्यापकों के लिए), भेंट-वार्ता, व्यक्तिगत-भेंट आदि शोध उपकरणों की सहायता से डभोई के उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में पढ़नेवाले छात्रों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

1) सरकार को हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट करना चाहिए । कई हिन्दी अध्यापक इन उद्देश्यों के बारे में अज्ञात होने के कारण वे सही शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं । जो हिन्दी शिक्षण आदि विषयों में निष्णात् होते हैं उन्हीं को हिन्दी अध्यापक की पदवी दी जाये ।

2) हिन्दी पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकता है । छात्रों को भाषा कौशल, लेखन-कौशल, वार्तालाप एवं गृहकार्य के द्वारा पर्याप्त अभ्यास देना चाहिए ।

3) पाठशालाओं में हिन्दी की पुस्तकों का अभाव है । हिन्दी अध्यापन में इनका महत्वपूर्ण स्थान है ।

4) हिन्दी शिक्षण में सहायक साधनों का विशेष महत्व होता है । इसलिए हिन्दी अध्यापकों को इन साधनों की प्राप्ति में सरकार को मदद करना चाहिए ।

5) छात्रों के मन पर मातृभाषा का बहुत प्रभाव है । हिन्दी अध्यापक हिन्दी तथा गुजराती वाक्य रचना को तुलनात्मक विधि के द्वारा प्रस्तुत करके उनकी गलतियों को निवारण करना चाहिए । छात्रों के साधारण गलतियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त वातावरण का अभाव, हिन्दी शिक्षण पद्धतियों का अभाव, छात्रों की रूचि का अभाव, हिन्दी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में सुधार की आवश्यकता पर शोधकर्ता ने अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

9 इन्दु भटनागरः 1971 : आपने आगरा शहर के आठवीं कक्षा के छात्रों के उच्चारण संबंधी निदानात्मक परीक्षण" का लघु शोध प्रबंध एम्0 एड्0 परीक्षा के लिए आगरा विश्वविद्यालय को प्रस्तुत किया है । शोधकर्ता ने छात्रों के श्रुतिलेख की पुस्तकों में प्राप्त ऐसे शब्दों का चयन किया जिसका उच्चारण सही रूप से करना कठिन है । इन शब्दों से एक परीक्षा-पत्र तैय्यार किया गया है और सौ छात्रों पर इसका वितरण किया गया । इस परीक्षण में जो बहुत कम अंक प्राप्त किये हैं शोधकर्ता ने उनकी मौखिक-परीक्षा भी ली है । इनके उच्चारण सम्बन्धी गलतियों का परिचय दिया गया और एक सप्ताह के बाद एक निदानात्मक परीक्षण का आयोजन किया गया है । इसमें छात्रों की गलतियों को वैज्ञानिक ढंग से मापन किया गया है । इसमें शोधकर्ता ने आठवीं कक्षा के छात्रों को ही परिचयन के रूप में लिया है ।

इस शोध कार्य से प्राप्त उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं ।

उपलब्धियाँ :-

1) अधिक संख्यक छात्रों ने हिन्दी में उच्चारण की गलतियाँ की हैं । प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापक = इस ओर ध्यान न देना एक कारण है ।

2) छात्रों का ध्यान व्याकरण सम्बन्धी गलतियों की ओर नहीं है ।

सुझाव :

उपर्युक्त उपलब्धियों के परिपेक्ष में शोधकर्ता ने छात्रों को वर्तनी संबंधी गलतियों को दूर करने के निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) भाषा-शिक्षण एक सामूहिक प्रतिक्रिया है । प्रारंभ से ही छात्रों को सही वाचन, उच्चारण और लेखन सिखाना चाहिए ।

2) अध्यापक स्वयं/नवीन शिक्षण विधियों से परिचय प्राप्त करें । अध्यापक को सहायक साधनों की सहायता पूर्ण रूप से लेनी चाहिए । इस सम्बन्ध में अध्यापकों को मार्गदर्शन की पुस्तकें देनी चाहिए ।

3) अध्यापक छात्रों की उत्तर पुस्तकें, श्रुतिलेखन की पुस्तिकें तथा गृहकार्य का संशोधन करते समय उन छात्रों की वर्तनी की कापियों को चुनना चाहिए जिनमें वर्तनी संबंधी गलतियाँ अधिक हुई है । बाद में उनकी वर्तनी को शुद्ध करने के लिए अध्यापक को संदर्भानुसार प्रयत्न करना चाहिए ।

4) वर्तनी में पिछड़े हुए छात्रों के लिए अध्यापक स्वयं अभ्यास तालिकाओं का निर्माण करें और छात्रों को इन गलतियों से बचायें ।

10 श्री पी0 चिन्नप्पा : जी ने 1972 में "उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं की द्वितीय भाषा का पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों का सर्वेक्षण और उपयोगी सुझाव" नामक लघु शोध प्रबन्ध एम्0 एड्0 उपाधि के लिए प्रस्तुत किया है ।

आप अपने शोध प्रबंध में भारत में हिन्दी का स्थान, विभिन्न आयोगों में हिन्दी का स्थान आदि बातों पर प्रभाव डालते हुए आन्ध्र प्रदेश सरकार से स्वीकृत आठवीं, नवमीं एवं दसवीं कक्षा की द्वितीय भाषा हिन्दी पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों की आलोचना की है । आपके इस शोधकार्य से द्वितीय भाषा हिन्दी का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों से संबंधित जो वास्तविक उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं जिनके आधार पर शोधकर्ता ने निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) प्रप्रथम छात्रों को भाषा कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना) आदि का अभ्यास ठीक ढंग से सिखाना चाहिए ।

2) कक्षा में हिन्दी का अध्यापक स्वयं छात्रों से हिन्दी में बातचीत करें और छात्रों को बातचीत करने की प्रेरणा दें ।

3) छात्रों की मातृभाषा एवं हिन्दी भाषा के तुलनात्मक रूपों को उनके सामने रखने चाहिए ।

4) छात्रों के उच्चारण संबंधी गलतियों के प्रति अध्यापक विशेष ध्यान दें । उच्चारण की प्रत्येक गलती लेखन की गलती बन जाती है ।

उपर्युक्त गौण सुझावों के अतिरिक्त शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य के परिपेक्ष में पाठ्यक्रम संबंधी निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) किसी विशेष कक्षा के लिए भाषा के किन किन बातों को सिखाने की आवश्यकता है इसका सही निर्धारण पाठ्यक्रम में होना चाहिए । आन्ध्र प्रदेश सरकार से स्वीकृत प्रस्तुत हिन्दी पाठ्यक्रम में इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया है ।

2) आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से नहीं किया है । इसलिए पाठ्यक्रम अस्पष्ट है ।

3) पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में पाठ्यक्रम पर ध्यान नहीं दिया गया है ।

4) पाठ्यक्रम में विविधता नहीं है । मौलिकता का अभाव है और अंग्रेजी पाठ्यक्रम की नकल की गई है ।

5) पाठ्यक्रम विविध / कक्षाओं के स्तर को दृष्टि में रखकर तैय्यार नहीं किया गया है ।

6) पाठ्यक्रम ब के निर्माण में प्रांतीय एवं राष्ट्रीय मान्यताओं को ध्यान देना चाहिए ।

इनके अतिरिक्त शोधकर्ता ने हिन्दी पाठ्यपुस्तकों से संबंधित निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

1) पाठ्यपुस्तक का रूप सर्वांगीण सुन्दर रहे, अर्थात् पाठ्यपुस्तकों के अन्तर एवं बाह्य रूप ठीक रहे ।

2) पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ नहीं होने चाहिए । जिनसे छात्र भाषा सीखने में विफल होते हैं ।

3) पाठ्यपुस्तक वर्तमान समाज को प्रतिबिम्बित करने में सक्षम हो ।

4) पाठ्यपुस्तक में साहित्य से अधिक भाषा कौशलों एवं तत्वों पर अधिक ध्यान देना चाहिए ।

पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अनुभवी अध्यापकों की सहायता से हो जो प्रतिदिन कक्षा में पढ़ाकर अनुभव प्राप्त करते हैं । अन्त में शोधकर्ता ने कहा कि द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण और उसके उद्देश्यपूर्ण सफल होने हैं तो आधारभूत शब्दों का निर्माण स्तरानुसार करें और हिन्दी अध्यापकों को उचित शिक्षण दें ।

11 श्री एल0 बलराम रेड्डी : सन् 1973 में "एस0 एस0 सी0 (दसवीं कक्षा की परीक्षा) की द्वितीय भाषा हिन्दी में विद्यार्थियों के अनुत्तीर्ण होने के कारणों का सर्वेक्षण एवं आवश्यक सुझाव" पर एक शोध प्रबंध एम्0 एड्0 की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया है । आपके मार्गदर्शक = श्री रायबलवीर प्रसाद जी हैं ।

शोधकर्ता ने अपने लघु शोध ग्रंथ के अनुच्छेदों में हिन्दी की वर्तमान स्थिति को बताते हुए आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी के स्थान पर अपने विचार प्रकट किये हैं । एस0 एस0 सी0 में आन्ध्र प्रदेश के छात्र हिन्दी में अनुत्तीर्ण होने के कारण तथा तत्संबंधी सुझाव निम्न प्रकार दिये हैं ।

1) उन्नत पाठशालाओं में द्वितीय भाषा हिन्दी के अध्यापन के लिए सप्ताह में तीन घण्टों का समय जो निश्चित है, वह बिलकुल कम है । सप्ताह में हिन्दी शिक्षण के लिए छः घण्टों का होना आवश्यक है ।

2) पाठ्यपुस्तकों का चयन स्तरानुसार नहीं है । अनुभवी अध्यापकों से इनका चयन हो ।

3) हिन्दी में उत्तीर्णांक न पाने पर भी छात्रों को उच्च कक्षा में भेजा जाता है । यह दोषपूर्ण है । हिन्दी को अनिवार्य विषय बनाये जाये ।

4) द्वितीय भाषा हिन्दी के प्रश्नपत्र की रचना दोषपूर्ण है । इसमें निबन्धात्मक प्रश्न ही अधिक पूछे जाते हैं ।

5) उत्तर पुस्तकों को जाँचने की पद्धति ठीक नहीं है । मूल्यांकन में विश्वसनीयता का अभाव है ।

6) हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए 20% जो अंक निर्धारित किये हैं वे बिलकुल कम हैं । हिन्दी के उत्तीर्णांक अन्य विषयों के जैसे समान हो ।

7) उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में एक सीनियर हिन्दी पंडित की नियुक्ति हो । इस प्रकार के व्यवहारिक सुझावों को शोधकर्ता ने अपने लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया हैं ।

12 श्री भरतवीर : जी ने एम्0 एड्0 उपाधि निमित्त लघु शोध प्रबंध "आन्ध्र प्रदेश के निम्न माध्यमिक स्कूलों में द्वितीय भाषा हिन्दी के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन तथा उपयोगी सुझाव" विषय को लेकर सन् 1974 में प्रस्तुत किया है । इस लघु शोध प्रबंध में मार्गदर्शक पी0 चिन्नप्पा जी, एम्0 ए0, एम्0 एड्0 हैं ।

शोधकर्ता ने इसमें भाषा की परिभाषा, भाषा का विकास, भाषा की प्रकृति तथा विभिन्न रूपों को विस्तारपूर्वक चर्चा की है ।

द्वितीय अध्याय में भाषा की व्यापकता और शिक्षा के उद्देश्यों पर अपने विचार प्रकट करते हुए भाषा शिक्षण के विभिन्न कौशलों पर प्रकाश डाला है ।

इसमें शोधकर्ता ने मातृभाषा एवं द्वितीय भाषा शिक्षण में भिन्नता तथा परस्पर संबंध को स्पष्ट किया है ।

तृ/स्म
तृतीय अध्याय में शोधकर्ता ने हैदराबाद राज्य तथा अर्वाचीन आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना क्षेत्र में हिन्दी शिक्षा की प्रगति पर एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय दिया है और आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी शिक्षा की वर्तमान नीति को दर्शाया ।

चतुर्थ अध्याय में शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा भाषी विद्यार्थियों के सामने आनेवाली साधारण समस्याओं को बताया है । शोधकर्ता ने नगरद्वय को ही अपना कार्यक्षेत्र माना है ।

पंचम अध्याय में निम्न माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों की आलोचना भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से की ।

षष्ठ अध्याय में शिक्षण पद्धतियों एवं हिन्दी अध्यापकों की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की है ।

सप्तम अध्याय में शोधकर्ता ने पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों से संबंधी विचारों को प्रस्तुतकरते हुए निम्न सुझाव दिये हैं ।

1) सातवीं कक्षा के अन्ततक विद्यार्थियों को 1450 शब्दों का ज्ञान होना आवश्यक है । आन्ध्र क्षेत्र में शब्दों की संख्या 750 तक ही सीमित कर देना उचित होगा ।

2) आन्ध्र और तेलंगाना क्षेत्र के लिए अलग अलग पाठ्यक्रम हो ।

(3) आन्ध्र और तेलंगाना क्षेत्रों के लिए अलग पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता है ।

(4) आन्ध्र क्षेत्र के लिए छात्रों की सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे उन्हें हिन्दी का अधिक से अधिक वातावरण मिल सके ।

(5) शोधकर्ता ने मौखिक कार्य पर अधिक बल देने का सुझाव दिया है और उपर्युक्त शिक्षण प्रणाली की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है ।

13) श्री विद्याभूषण जी : ने 1974 में एम्0 एड्0 उपाधि के लिए एक लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है । आपने "हैदराबाद और सिकन्दराबाद के कुछ स्कूलों में द्वितीय भाषा हिन्दी अध्यापन की समस्याओं का सर्वेक्षण" नामक विषय पर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है ।

अपने शोधकार्य में हिन्दी अध्यापन से संबंधित कुछ प्रमुख समस्याओं पर प्रकाश डाला है । उनमें :-

1) अध्यापक तथा छात्रों से संबंधित वातावरण जन्य समस्याएँ ।

2) छात्रों की रुचि संबंधित समस्याएँ ।

3) भौतिक साधन जन्य समस्याएँ ।

4) शैक्षणिक प्रक्रिया से संबंधित समस्याएँ ।

5) हिन्दी सीखानेवालों पर उनकी मातृभाषा के ~~प्रभाव~~ आघात संबंधी समस्याएँ आदि प्रमुख हैं । शोधकर्ता ने इन समस्याओं के कारणों को जानने के लिए प्रश्नावली, भेंटवार्ता आदि साधनों को अपनाया । सर्वेक्षण के विश्लेषण के बाद शोधकर्ता ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

1) हिन्दी अध्यापन के लिए अध्यापक अनुकूल वातावरण का सृजन करना चाहिए । इसके लिए अध्यापक छात्रों से हिन्दी में बातचीत करना चाहिए । पाठ्यपुस्तकों की सामग्री हिन्दी माध्यम से ही देना चाहिए और छात्रों को बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।

2) हैदराबाद एवं सिकन्दराबाद के छात्रों पर उर्दू का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । 1950 से पूर्व यहाँ पर उर्दू का वातावरण रहना ही इसका प्रमुख कारण है । इस प्रभाव को कुशल अध्यापक हिन्दी सीखाने में मदद के रुप में लेना चाहिए ।

3) हैदराबाद एवं सिकन्दराबाद से केवल 75% हिन्दी अध्यापक प्रशिक्षित हैं । इसलिए पूरे हिन्दी अध्यापकों को प्रशिक्षण की सुविधा देनी चाहिए ।

4) शोधकर्ता का कहना है कि द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण को सुदृढ़ बनाने के लिए सरकार हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में साहित्य को अधिक महत्व न देकर भाषा के तत्वों पर अधिक ध्यान देना चाहिए ।

5) पाठ्यपुस्तकों का मुद्रण, आकार आदि भी आकर्षक होना चाहिए ।

6) आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग हुआ है । तत्सम शब्दों का प्रयोग होना आवश्यक है ।

इसके अतिरिक्त शोधकर्ता ने श्रव्य-दृश्य साधनों की आवश्यकता, एवं महत्व पर प्रकाश डाला है ।

***

निष्कर्ष

शोधकर्ता ने विषय की मौलिकता एवं आवश्यकता को दृष्टि में रखकर संबंधित क्षेत्र में विभिन्न शोधकर्ताओं के लघु शोध प्रबंधों का साधारण परिचय करने से यह पता चला कि प्रस्तुत शोध शीर्षक विषय एवं उपयोगिता की दृष्टि से भी मौलिक एवं स्वतंत्र है ।

यहाँ पर एक बात कहना जरूरी है कि संबंधित क्षेत्र के सभी पूर्वकृत कार्य एम्0 एड्0 उपाधि के लिए प्रस्तुत किया हैं ।

श्री सीताराम शास्त्री जी आगरा विश्वविद्यालय से आन्ध्र प्रदेश के हिन्दी अध्यापकों की समस्याओं पर शोध प्रबंध प्रस्तुत करके पी0 एच0 डी0 उपाधि प्राप्त की है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में आन्ध्र प्रान्त के तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों के हिन्दी अधिगम संबंधी समस्याओं एवं कठिनाइयों पर प्रकाश डालना है । इस दृष्टि से शोधकर्ता का यह शीर्षक मौलिक है किसी संबंधित पूर्वकृत कार्य से इसका प्रत्यक्ष संबंध नहीं है ।

आगामी अध्याय में शोधकर्ता ने इस विषय का विस्तार वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है ।

***

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

विभिन्न विश्वविद्यालयों को प्रस्तुत एम्० एड्० के लघु शोध प्रबंध

1)	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी	1957	उस्मानिया विश्व विद्यालय, हैदराबाद
2)	श्री बी० पी० लुल्ला	1957	महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा
3)	श्री बादेप्रसाद	1959	उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
4)	श्रीमती सरताज किशोरी	1960	"
5)	श्री चंद्रदेव शर्मा जी	1961	"
6)	श्रीमती सरस्वती देवी	1962	"
7)	श्री बुर्रा वेंकटप्पय्या	1962	"
8)	श्री जयंत सी० शाह	1969	महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा
9)	श्रीमती इन्दु भटनागर	1971	आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
10)	श्री पी० चिन्नप्पा	1972	उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
11)	श्री एल० बलरामरेड्डी	1973	"
12)	श्री भरतवीर जी	1974	"
13)	श्री विद्याभूषण जी	1974	"

***